जय भगवद् गीते,
जय भगवद् गीते,
हरि हिय कमल विहारिणि,
सुन्दर सुपुनीते,
जय भगवत गीते।।

कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि,
कामासक्तिहरा,
तत्त्वज्ञान-विकाशिनि,
विद्या ब्रह्म परा,
जय भगवत गीते।।

निश्चल-भक्ति-विधायिनि,
निर्मल मलहारी,
शरण-सहस्य-प्रदायिनि,
सब विधि सुखकारी,
जय भगवत गीते।।

राग-द्वेष-विदारिणि,
कारिणि मोद सदा,
भव-भय-हारिणि तारिणि,
परमानन्दप्रदा,
जय भगवत गीते।।

आसुर-भाव-विनाशिनि,
नाशिनि तम रजनी,
दैवी सद् गुणदायिनि,
हरि-रसिका सजनी,
जय भगवत गीते।।

समता त्याग सिखावनि,
हरि-मुख की बानी,
सकल शास्त्र की स्वामिनी,
श्रुतियों की रानी,
जय भगवत गीते।।

दया-सुधा बरसावनि,
मातु कृपा कीजै,
हरिपद-प्रेम दान कर,
अपनो कर लीजै,
जय भगवत गीते।।

जय भगवत गीते,
जय भगवत गीते,
हरि हिय कमल विहारिणि,
सुन्दर सुपुनीते,
जय भगवत गीते।।

स्वर अनूप जलोटा जी।
प्रेषक मालचन्द शर्मा जी।
9166267551

Source: https://www.bharattemples.com/jay-bhagwat-geeta-aarti/

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw